सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल। (LEFI,Chennai)

मई-जून, 2003

सच्ची शक्ति

लूका(१०:१९) 'देखो, मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को कुचलने तथा शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है, अतः कोई तुम्हें हानि नहीं पहुँचाएगा।'

जिस प्रकार सी. टी.(स्ट्ड) अपने जीवन की जाँच करता था, वैसे ही हमें भी अपनी जाँच करनी चाहिए, यह जानने के लिए कि परमेश्वर के वचन बाइबल की कितनी आज्ञाएँ हमने अपने जीवन में अपनाई हैं। प्रभु ने हमें एक कोरा चैक दिया है। 'मैं तुम्हें शत्रु की सारी शक्ति के ऊपर सामर्थ्य देता हूँ।' तो शैतान कैसे हमारे ऊपर क़ाबू पा सकता है? शैतान हमें केवल तभी क़ाबू में कर सकता है, जब हमारे मन में कोई पाप छिपा हो।

अधिकतर हमें इस बात की गहरी इच्छा नहीं होती कि अपने व्यक्तिगत जीवन में विजय प्राप्त करें। यह कितनी बड़ी चूक है। यदि हमारे अपने हृदय में यह विजय नहीं है तो हम दूसरों की सहायता कैसे करेंगे? विजय प्रेम में निहित है। प्रेम पड़ोसी का बुरा नहीं चाहता। प्रेम नीति का पालन है। लालसा स्वार्थी है और शारीरिक है। वह जो शरीर से है वह शारीरिक है और वह जो आत्मा से है आत्मिक है। यदि तुम्हारा मन और बुद्धि इस ओर लगे हों - 'कैसे मैं परमेश्वर की महिमा करूँ, और उसके नाम को पवित्र रखूँ?'

सच्ची शक्ति...पृष्ठ २ पर..

मृत्युंजय ख्रिस्त ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

पक्की सुरक्षा का घर

लूका (६:४७,४८) 'जो कोई मेरे पास आता है और मेरी बातों को सुनकर उन्हें मानता है मैं बताता हूँ कि वह किसके समान है वह उस मनुष्य के समान है जिसने घर बनाने के लिए गहरा खोद कर, चट्टान पर नींव डाली, और जब बाढ़ आई और जल की धाराएँ उस मकान से टकराईं तो उसे हिला न सकीं क्योंकि वह मकान पक्का बना था।'

जब लोग घर बनाते हैं, वे लापरवाह नहीं रहते, वे गहरी नींव खोदते हैं क्योंकि इस घर की छत के नीचे परिवार के सभी सदस्य रहेंगे। यीशु कहते हैं, 'जब तुम गहरा खोदते हो तो सच्चाई को पाते हो। केवल वे ही जो उसके वचन का पालन करते हैं और उस चट्टान पर नींव डालते हैं, जो मसीह है। जब तुम वचन जी रहे हो, तुम ऊँचा उठाने वाली ताक़त का अनुभव करते हो। हर बार जब तुम करो बार (आज्ञापालन) धरती में गाड़ते हो और उस पर अपना भार डालते हो, एक असामान्य शक्ति तुम्हें उठाती है। एक होगा कि तुम सामान्य से दोहरी गहराई में जाओगे।

उस हरेक व्यक्ति के पीछे जो परमेश्वर के वचन को जीने की चेष्टा कर रहा है, स्वर्गदूत रहते हैं। हरेक वह व्यक्ति जो वचन के अनुसार प्रार्थना कर रहा हो जल्द ही सच्चाई को पाएगा, और उस मंज़िल पर पहुँचता है जहाँ उसकी भेंट जीवित व्यक्तित्व से होती है जो स्वंय मसीह है। एक बार जब तुम उससे मिलते हो, तुममें कोई भय नहीं रहेगा। और उस पर तुम अपनी नींव रखते हो। जिस वचन पर तुमने विश्वास किया है वे केवल अक्षर मात्र नहीं हैं या भाषा के वाक्य या पद नहीं हैं, बल्कि वह वचन है जिसकी पूर्ण एकता मसीह के साथ है। यह वचन स्वंय मसीह है। वह जीवन की रोटी है।

हरेक जो उसके वचन का पालन करने की चेष्टा कर रहा है एक सिद्ध सुरक्षा के घर का निर्माण कर रहा है। बाढ़ आकर चाहे उस पर चपेट मारे, लेकिन वह हमेशा खड़ा रहेगा। हम मज़बूत दीवारों और पुलों के मज़बूत खम्बों, को बाढ़ द्वारा बहा ले जाते देखते हैं। इन पुलों की नींव कमज़ोर है। क्या तुम अपने जीवन का निर्माण परमेश्वर के वचन के आधार पर कर रहे हो? क्या तुम गहरा खोद रहे हो? ऐसे लोग कभी नहीं हिलेंगे और उनके घर कभी नहीं हिलेंगे और उनका भविष्य सदा सुरक्षित रहेगा।

जब तुम बहुत गहराई में खोदते हो, तुम जीवन के लिए शहद, तेल और जो कुछ भी चाहिए पाओगे। इस संसार में और क्या चाहिए, केवल स्थिर मसीहत और गहरी शांति और प्रेममय सेवा। जितना अधिक तुम दूसरों की सेवा करते हो, उतना ही अधिक आनंद तुम पाओगे। यह अद्भुत जीवन है और अद्भुत खोज, जो मसीह ने हमें दी है।

वह जो उसके (बाइबल) वचन का पालन करता है, गहरा खोदता है और इस चट्टान पर अपने परिवार का पालन पोषण करता है, ऐसे परिवार की नींव मसीह है। जब तुम प्रार्थना में और वचन पालन में गहरे जाते हो, तुम भी संत पौलुस की भाँति स्वर्ग में उठा लिए जाओगे, जहाँ तुम परमेश्वर को देखोगे, आमने-सामने उसकी पूरी महिमा में। क्या संत पौलुस ऐसे दर्शन को पाने के बाद अपने विश्वास में कमज़ोर हो सकता है? यही कारण है कि वह कहता है कोई भी ऐसी चीज़ नहीं जो उसे परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सके। जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में निहित है। किसी भी क़ीमत पर वचन का पालन कहो और गहराई में जाओ। केवल वहाँ पर तुम चट्टान पाओगे और वहीं पर तुम शहद पाओगे जो तुम्हारे जीवन में मिठास लाएगा। तब वह हरेक चीज़ जो तुम्हारे संपर्क में आएगी मीठी हो जाएगी।

- स्वर्गीय श्रीमान एन दानियल।

...सच्ची शक्ति पृष्ठ १ से
तब शैतान को तुम्हारे शरीर की लालसाओं पर आक्रमण करने का बहुत कम अवसर मिलेगा। तुम प्रभु द्वारा सिखाई प्रार्थना को पूरा कर रहे हो, 'तेरा नाम पवित्र माना जाए।'लूका(११:२)

मैं अनुभव करता हूँ कि हमारा विश्वास बहुत सीमित है। तुममें से कुछ यह सोच रहे हो कि हम बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। मुझे लगता है हमने अधिक काम नहीं किया है। शैतानी ताक़त, मूर्तियों की ताक़त अनेक देशों पर अपनी पकड़ बनाए है।

यीशु ने कहा, 'मैं तुम्हें शत्रु की सारी ताक़त पर क़ाबू दूँगा।' हम शत्रु की ताक़त को बाँधने में असमर्थ रहे हैं। उस रात जब इस्राएली लोग मिस्र देश से निकल कर आ रहे थे, अंधकार की सारी शक्ति पूर्ण तय बाँधी हुई थी। यहाँ तक कि वे इस्राएल के एक भी परिवार को छू नहीं सकी। ऐसी विजय हमें अपने देश के लिए माँगनी चाहिए।

हम ऐसी शक्ति को और अधिक क्यों नहीं पा रहे हैं? मसीह के दुख में भागी होने के लिए हमारे अंदर कोई इच्छा नहीं है। फिलिप्पियों (३:१०) 'जिससे कि मैं उसको और उसके जी उठने की सामर्थ्य को तथा उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ, कि उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ।'

संत पौलुस कहता है कि वह मसीह की तकलीफ़ों में भागी होना चाहता है, उस हद तक कि अपने स्वामी की मृत्यु में भी। कुछ चीनी और अफ़्रीकी मसीहियों ने मसीह के नाम के लिए बहुत यातनाएँ सही हैं। हमने इस प्रकार के अनुभव को नहीं पाया है। सुविधा और आराम हमारी आत्मिक प्रगति को रोके हुए हैं, हम परमेश्वर के लिए महान कार्य नहीं कर पा रहे हैं।

आज के दिन हम अपने युवाओं को डॉलर के पीछे दौड़ता देख रहे हैं, और ऐसे नवयुवकों और नवयुवतियों को पाना दूभर हो गया है जो परमेश्वर के राज्य का बोझ और प्रकाशन लिए हों। हरेक देश और समाज की मान्यताएँ हैं। तुम अपनी डिग्री उच्च श्रेणी से पास करो, तुम एक अच्छी नौकरी प्राप्त करो। उसके बाद एक अच्छा घर बनाओ। तुम ऐसी लड़की से शादी करो जिसकी अच्छी नौकरी लगी हो। जब तुम दोनों कमा रहे हो तो घर पर आशीष आएगी। समाज इस प्रकार का मार्ग दर्शन हमारे ऊपर थोपता है। लेकिन हमें इस संसार के साँचे में नहीं ढलना। जब तुम परमेश्वर के साथ चलोगे तो इस संसार के ऊपर सरलता से विजय पाओगे।

एक क्षेत्र जिसमें हमें विजय प्राप्त करनी चाहिए, वह है, हमारे 'बोल', प्रभु यीशु ने कहा,'इसलिए जो कुछ तुमने अँधियारे में कहा, वह उजियाले में सुना जाएगा, और जो कुछ तुमने भीतर के कमरों में फुसफुसा कर कहा वह छत पर से प्रचार किया जाएगा। हे मेरे मित्रों, मैं तुमसे कहता हूँ, उनसे मत डरो जो शरीर को घात करते हैं पर इसके पश्चात और कुछ नहीं कर सकते।' लूका(१२:३,४) आज यदि अपने घर में तुम कोई नासमझी की बात कर रहे हो, वह एक आदत बन जाएगी। कुछ दिनों के बाद, जब दूसरे तुम्हारे घर में होंगे, तुम उसी प्रकार बोलोगे। इस प्रकार वह खुल कर सामने आ जाएगी।

कभी-कभी हम ऐसा सोचते हैं, 'ओह, यह शब्द इस कमरे से कभी बाहर नहीं निकलने चाहिए।' यदि तुम ऐसे शब्द उस कमरे से बाहर बोलने से डरते हो तो तुम इस प्रकार के शब्द ही क्यों बोलते हो, जिनमें ज्योति की गवाही नहीं है? तुम्हें कभी ऐसा नहीं कहना चाहिए, 'जो कुछ मैंने यहाँ कहा दूसरों को मत बताना।' यदि वे न्यायसंगत शब्द हैं, यदि वे शुद्ध शब्द हैं, यदि वे प्रिय शब्द हैं, यदि वे प्रोत्साहक शब्द हैं, तो ऐसा हो कि सभी उनको सुनें। इसमें डरने की कोई बात नहीं है। यही एक मसीही व्यक्ति है।

इसलिए एक मसीही के जीवन में कुछ भी संदेहास्पद बात नहीं होती है। वह खुला है, ज्योति में चलता, ज्योति में बोलता और जो कुछ उसने गुप्त में बोला है वह छत पर से घोषित किया जा सकता है। क्या तुम्हारे शब्द ऐसे खुले में घोषित किए जा सकते हैं? हो सकता है तुम अपनी पत्नी के कान में अपनी एक सांसारिक लालसा की बात बोल रहे हो। अंत में, जो तुम्हारे हृदय में है तुम्हारे जीवन में दिखाई पड़ेगा।

यदि हम नकारात्मक वार्तालाप से दूर रहे और अपने शब्दों पर विजय प्राप्त किए हों तब हम प्रार्थना में अत्यधिक सामर्थी और उसकी (प्रभु यीशु) तकलीफ़ों में सहभागी होंगे। यीशु के लिए दुख झेलना एक सौभाग्य है। ऐसा हो प्रभु हमारी सहायता करे कि हम उसकी तकलीफ़ों में सहभागी हों ताकि हम उस सामर्थ्य को पाएँ जो हमारे प्रिय प्रभु ने हमें देने की प्रतिज्ञा की है।

- जोशुआ दानियल।

पहाड़ी उपदेश - प्रभु यीशु द्वारा दिए गए धन्य वचन। मत्ती (५:३-११)

धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे सान्त्वना पाएंगे।

धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।

धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्ही का है।

धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें यातना दें और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरूद्ध सब प्रकार की बातें कहें - आनन्दित और मग्न हो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान् है।

पृष्ठ २

परमेश्वर में धनी

मैरी बोसांक्ट एक धनी अँग्रेज़ की बेटी थी। वह सभ्रांत वर्ग की थी। वह बेहद क़ीमती और बेहतर कपड़े व ज़ेवर पहना करती थी। उसके पिता सभी 'सही' लोगों को जानते थे। जिस भी चीज़ की मैरी को कमी लगती, उसे केवल ख़रीदने की ज़रूरत थी। और अधिक वह क्या चाह सकती थी? लेकिन बोसांक्ट परिवार में ऐसा हुआ, मानो बम फटा हो। मैथोडिस्ट सोसायटी द्वारा आयोजित सभाओं में आने के लिए मैरी को निमंत्रण आया। अपने पिता को बिना बताए वह एक सभा में गई और उसके बाद बार-बार कई सभाओं में।

तब ऐसा हुआ, मैरी बोसांक्ट का हृदय परिवर्तन (उद्धार) हुआ। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह बादलों में तैर रही हो। ओह! वह आनंद। उसने अपने पिता को बताया। उसके पिता ने इसे बड़ी अनादर की बात समझा कि उसकी बेटी यह सब छोड़ कर मैथोडिस्ट सोसायटी का भाग बन रही थी। यह कितना क्रूर, कितनी कृतघ्नता थी।

इससे बढ़कर क्या था, मैरी ने अपने भाइयों को सभा के लिए निमंत्रण भेजा और उनसे उनके आत्मा के उद्धार के विषय में बात की। वह मैथोडिस्ट सोसायटी के लोगों की भाँति साधारण वस्त्र पहनने लगी। इसने घाव को और अधिक चोट पहुँचाई, और एक दिन उसके पिता उसके पास यह माँग लेकर आए।

'मैरी, मैं तुमसे यह शपथ चाहता हूँ। वह यह है कि तुम अब से अपने भाइयों को 'मसीही' बनाने का प्रयत्न नहीं करोगी।'

मैरी ने उत्तर दिया, 'पिताजी, मैं यह सहमति नहीं दे सकती।'

'यदि तुम यह सहमति नहीं दे सकती, तो तुम मुझे तुम्हें घर से बाहर निकालने के लिए मजबूर कर रही हो।'

'जैसा आपने सोचा है, मैं वैसा ही करूँगी।'

उसके पिता ने नाराज़ होते हुए कहा, 'तुम उन सब चीज़ों का जो मैंने तुम्हें उपलब्ध कराईं ज़रा भी आदर नहीं कर रही हो, उन लोगों की भाँति साधारण वस्त्र पहनती हो।'

बेचारी मैरी कैसे अपने पिता को समझाए कि वह उससे बेहद प्रेम करती है और उनकी रुचि का और उनके द्वारा पूरी की गई ज़रूरतों का आदर करती है। लेकिन वह अपने उत्तर में निश्चित थी, 'जब मैं इस शब्द 'पवित्रता' के बारे में सोचती हूँ या अराधना योग्य यीशु के नाम के बारे में, तो पहले से बढ़कर मेरा हृदय परमेश्वर की सेवा के लिए प्रज्जवलित हो जाता है। मैं अब आपके साथ उन मनोरंजन के स्थानों पर नहीं जा सकती, और न ही वे महंगे कपड़े जो आप मेरे लिए खरीदते हो पहन सकती। मैं परमेश्वर की हूँ और केवल उसी की।' ज़रा सोचो कि एक नौजवान या नवयुवती, पवित्रता के विचारों और यीशु के नाम से इतना प्रभावित हो।

मैरी के पिता आग बबूला हो उठे और उसे अपना सामान बाँध कर घर से निकल जाने को कहा। उसने घर की घोड़ागाड़ी मँगवाई और जल्द ही मैरी, अपने सारे सामान को एक बक्से में डाल, मसीह के पीछे चलने के लिए घर छोड़ कर चल दी। उसकी युवा नौकरानी को, जो स्वंय मसीही थी, उसके साथ जाने की आज्ञा मिल गई। विदा लेते हुए मैरी ने अपने पिता को उस वरदान के बारे में बताया जो परमेश्वर ने उसे प्रकाशित वाक्य (३:४) '..कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए हैं वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए मेरे साथ चलेंगे-फिरेंगे, क्योंकि वे इस योग्य हैं।' से दिया था।

अमीरों के घर से, जो बड़े सुन्दर थे (तिकोनी छत वाले), नौकरों के कमरों की कतार, सुन्दर और हरे-भरे बग़ीचे, घोड़ागाड़ी वहाँ से लेयटनस्टोन मोहल्ले में गई जहाँ ग़रीबों के घर खड़े थे।

मैरी के घर में दो कमरे थे, जहाँ से भद्दी चिमनियाँ दिखाई पड़ती थीं और पड़ोसियों के गंदे चौक। वह मोमबत्तियाँ नहीं लाई थी और उसने उधारी दो कुर्सियाँ और मेज़ ली थीं। लेकिन उसके मन में, 'परमेश्वर की शांति थी , जो समझ के परे है।' फिलिपियों (४:७)

मैरी कई बार अपने घुटनों पर पड़ी (प्रार्थना के लिए) और वहाँ उसने यीशु को पाया, 'दस हज़ारों से बढ़कर सुन्दर।' प्रभु ने उसे भजन लेखक के शब्दों को याद दिलाया, भजन संहिता (२७:१०) 'मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है परंतु यहोवा मुझे सँभाल लेगा।'

प्रभु ने हमेशा अपनी प्रतिज्ञा पूरी की, कभी उसे नहीं छोड़ा। मैरी अधिकतर कहती थी, 'क्यों, मैं संसार से अलग की गई हूँ, परमेश्वर के लिए पवित्र हो कर रहूँ, इसे छोड़कर मेरा कोई और उद्देश्य नहीं है, शरीर में और आत्मा में पवित्र। मैं कैसी आनंदित प्राणी हूँ। सचमुच मेरा घर थोड़ा-सा स्वर्ग है।'

मैरी के नए घर में प्रार्थना सभाएँ होने लगीं और एक के बाद एक अनेक स्त्रियों ने भाग लेने की इच्छा व्यक्त की। उनकी संख्या इतनी बढ़ गई थी कि उसने जोन वैसली से रविवार की अराधना सभा के लिए एक प्रचारक को भेजने के लिए निवेदन किया, जोन वैसली ने उसे पूरा किया। मैरी ने अनेक बच्चों को अपने घर में रखा, लगभग तीस वयस्क। अपनी ज़रूरतों के लिए वे पूर्णतया परमेश्वर पर निर्भर थे। परमेश्वर, अनाथों का पिता, कभी भी उनकी ज़रूरत पूरी करने में नहीं चूका।

मैरी के पिता ने उसे १७६० में अपने घर से निकाला था। लगभग ३७ साल बाद, हेनरी एफ लाइट स्काटलैण्ड में पैदा हुआ था। जब लाइट आयरलैण्ड में सेवकाई के लिए तैयारी कर रहा था, मैरी अभी भी ग़रीबों की सेवा में लगी थी और लेयटनस्टोन और होक्स्टन के समाज से निष्काशित लोगों की सेवा में लगी थी। जवान लाइट (बाद में लोअर ब्रिक्सहेम का विकर बना) ने मैरी की कहानी को सुना। उसके साहस और जीवन की पवित्रता से प्रेरित हो उसने यह सुन्दर भजन लिखा -

यीशु, मैं ने अपना क्रूस उठा लिया है,
सब छोड़ तेरे पीछे चलने को,
त्यागा, ग़रीब, उपेक्षित,
अब से केवल तू ही मेरा सब कुछ।

हर मनचाही अभिलाषा नाश हो,
जो कुछ मैंने ढूँढ़ा, जाना और चाहा,
फिर भी मैं हूँ धनी स्थिति में,
परमेश्वर और स्वर्ग हैं मेरे ही।

चाहे संसार जाने तुच्छ और त्यागे,
उन्होंने मेरे उद्धारक को भी त्यागा,
लोगों की नज़रें और दिल देते धोखा,
तू नहीं लोगों की तरह झूठा।

और जब तू मुझे देख मुस्कुराए,
बुद्धि प्रेम और शक्ति के परमेश्वर,
शत्रु करेंगे घृणा और मित्र दें त्याग मुझे,
अपना चेहरा दिखा और चमक जाएगा सब कुछ।

सत्य की परख!

लूका (५:३१,३२) यीशु ने उत्तर दिया, 'भले-चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं परंतु रोगियों को होती है। मैं धर्मियों को नहीं पर पापियों को पश्चात्ताप करने के लिए बुलाने आया हूँ।'

पृष्ठ ३

ब्राह्मण वाद से छुटकारा

मैं एक हिंदू ब्राह्मण परिवार से हूँ, जो मद्रास में बसा है। मूर्ति पूजकों के बीच ब्राह्मण उन मूर्तियों के याजक कहलाते हैं जो पुराने रीति रिवाज़ों और अंधविश्वास से भरे हैं। हमारे परिवार के दैनिक जीवन में जोतिष्य, जन्मपत्री और शुभ-अशुभ समय को मान्यता दी जाती थी। मेरी माँ हिंदू मंदिरों में जाती और घर पर भी मूर्तियों की पूजा करती। मैं भी पूजा में उनकी सहायता करती। हाँलाकि मैं इन सब बातों में उनकी सहायता करती लेकिन मेरे मन में परमेश्वर का भय या पाप का भय नहीं था। क्योंकि ये सारे रिवाज़ खोखले था, थोड़े समय में परमेश्वर से मेरी रुचि दूर हो गई और मैं एक कठोर नास्तिक बन गई। मैं सोचने लगी कि सच्ची खुशी मुझे अपनी मनमानी करने से मिलेगी और जब मैं अपनी इच्छाओं को पूरा करूँगी।

बचपन से ही मैं बहुत हठी और विद्रोही लड़की थी। मेरे ऊपर किसी प्रकार का अनुशासन मुझे नहीं भाता था और मैं अपनी ही मनमानी करना चाहती थी। मैंने अपने माता-पिता के जीवन को दूभर कर रखा था। मैं उनके बटुए से पैसे चुराती, इस कारण झूठ बोलने का मार्ग खुल गया था। आठ साल की नन्हीं उम्र में ही मैंने अपनी माँ के हस्ताक्षर की नक़ल अपने परीक्षाफल पर कर दी थी और अपने अध्यापक को बताया कि मेरी माँ ने मेरे अंक देख लिए हैं।

जब मैं ग्यारह वर्ष की थी तो मेरी एक चचेरी बहन ने मुझे 'मंत्रतंत्र' का खेल सिखाया। ऊपर से देखने में यह खेल साधारण लगता था। लेकिन इसने मेरे जीवन को अवगति की ढलान पर धकेल दिया। पहले मैं कभी-कभार सिनेमा देखती थी और न बुरी पुस्तकें पढ़ती थी। लेकिन अब मुझे बुरी पुस्तकें पढ़ने और सिनेमा देखने की बुरी भूख लग गई।

इन बुरी आदतों के कारण, मेरा जीवनचर्या बुराई के मार्ग पर लग गई। बिना गाली बके मैं एक वाक्य भी नहीं बोल पाती थी। परमेश्वर की निगाह में, मेरे विचार, मेरी सोच और बोल बहुत ही घृणित थे। मेरे मन में शांति नहीं थी और जीवन दूभर हो गया। मैं याददाश्त और समझ खोने लगी। और मैंने यह पाया कि मैं पहले की भाँति अच्छी तरह से पढ़ाई नहीं कर पा रही थी। मैं नहीं जान पा रही थी कि मुझे क्या हो रहा है और इस बात की सोच करती थी कि कहीं मैं पागल तो नहीं हो रही हूँ।

अश्चर्यजनक रीति से ऐसे समय में मुझे मेडिकल कॉलेज में दाख़िला मिल गया। जब भी मैं पढ़ाई करने के लिए किताबों को लेकर बैठती, मैं अपनी किताबों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाती। जल्द ही मैंने एक मनोचिकित्सक की सहायता ली। परंतु मैंने पाया कि वह एक ढोंगी था। वह मुझे कोई निश्चित उत्तर नहीं दे पाया। मैंने 'सकारात्मक सोच' 'योग-साधना' और 'एकाग्रता' पर बहुत सी पुस्तकें पढ़ीं। लेकिन कोई भी कुछ सहायता नहीं कर पाईं।

मेरे माता-पिता ने मुझे एक ख़ास पूजा में भाग लेने के लिए बुलाया, यह ऐसे देवता की पूजा मानी जाती थी जो हर दुष्टता को दूर भगाता था। लेकिन जैसे ही पूजा संपन्न हुई, मैंने पाया कि मुझे शांति मिलने की बजाय मेरी स्थिति और अधिक बदतर हो गई। इस पूजा के समाप्त होते ही मेरा घर शोरगुल और घबराहट से भर गया। इस कारण, मेरा जो थोड़ा बहुत विश्वास हिंदू देवताओं पर था, वह भी जाता रहा।

मैं यह सोचती कि क्या इस संसार में शांति और प्रेम का परमेश्वर है? मैंने ऐसे प्रार्थना की, 'यदि सचमुच में ऐसा परमेश्वर है जो मेरी सहायता कर सकता है, वह अपने आप को मुझ पर प्रकट करे और मैं उसकी अनुयायी बनूंगी।' एक दिन मैंने प्रभु यीशु को देखा। उसने अपने हाथ मेरी ओर खोले हुए थे और मैं उसकी ओर खींची चली गई। और एक अद्‌भुत शांति की अनुभूति मेरे अंदर आने लगी। मैंने समझा कि यह यीशु ही सच्चा परमेश्वर है और प्रार्थना की कि वह मुझे ऐसी कलीसिया के बीच ले जाए, जहाँ मेरी सत्य और वास्तविकता की खोज में अगुवाई हो।

इसके जल्द ही बाद मुझे जनवरी १९८२ में लेमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप के विद्यार्थियों के कैंप में आने का निमंत्रण आया, वहाँ मैंने भाई जोशुआ दानियल को बाइबल से प्रचार करते देखा। मैंने सुना कि परमेश्वर अपने वचन से हमारे साथ बात करता है और हम परमेश्वर से व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह के स्वरूप में मिल सकते हैं।

परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने मुझे मेरे ढोंग और बुराई का भान कराया। मैं पश्चात्ताप और क्षतिपूर्ति करने लगी। मैंने अपने स्कूल शिक्षक से माफ़ी माँगते हुए यह पत्र लिखा कि मैंने अपनी माता के हस्ताक्षर की नक़ल अपने परीक्षाफल पर की थी। मैंने अपने कॉलेज के एक लेक्चरर से माफ़ी माँगते हुए यह पत्र लिखा कि मैंने उनकी कक्षा में बहुत हुड़दंग मचाया था। जो किताबें मैं अपने मित्रों को लौटाना भूल गई थी, मैंने वापस लौटाई। परमेश्वर ने व्यवस्थाविवरण (७:२५) '... खुदी हुई मूर्तियाँ तुम आग में भस्म कर देना, तू उन पर मढ़े हुए सोना-चाँदी का लोभ न करना, न उनको निकाल कर अपने लिए रखना, ऐसा न हो कि तू उसके द्वारा फँदे में पड़े।..' द्वारा बड़े स्पष्ट रूप से मूर्ति पूजा के बारे में बात की, तो मैंने वह मूर्तियाँ फेंक दीं। इसके बाद परमेश्वर ने मेरे साथ ख़ास रीति द्वारा मेरे गंदे मित्रों के साथ मित्रता के बारे में बात की, उसने यह २ कुरिन्थियों (६:१७,१८) 'उनमें से निकलो और अलग हो जाओ और जो कुछ अशुद्ध है उसे न छूओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा, और मैं तुम्हारा पिता होऊँगा और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होओगे।...' से बात की। प्रभु ने मुझे शक्ति और निर्भयता दी कि मैं इन संसारी मित्रों को छोड़ सकी।

मेरे इस नए अनुभव के कारण जो मुझे प्रभु यीशु मसीह के साथ मिला और जो परिवर्तन मेरे जीवन पर आया था, मेरे होस्टल के अन्य विद्यार्थी मुझसे दूर रहने लगे। परंतु मेरे कॉलेज के सारे दिनों में प्रभु यीशु मेरा 'सहारा' थे। उसने मुझे उद्धार की प्रतिज्ञा लूका (७:४८,५०) '...तेरे पाप माफ़ हुए...तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है, कुशल से चली जा।..' से दी।

मेरा जीवन शांति और आनंद से भर गया। प्रभु ने अच्छी तरह पढ़ाई करने में मेरी सहायता की। उसने मुझे मेरे दृष्टि, बोल और सोचविचारों पर विजय दी। मैं परमेश्वर के इस अनंत प्रेम के लिए अपने को बिल्कुल अयोग्य समझती हूँ। जो मुझे इस भयंकर अंधकार से निकाल कर लाया - मन और दिमाग़ के - अपने अद्‌भुत प्रकाश में लाया। मैं उसकी सेवा करना चाहती हूँ और जीवन भर उसकी ओर वफ़ादार रहना चाहती हूँ। और परमेश्वर के जनों की सहभागिता में बने रहना चाहती हूँ।

- डॉ. शांति शेषाद्रि।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।